# प्राक्कथन

''श्रीराधाचरित महाकाव्यम्'' के रचयिता आचार्य कालिका प्रसाद शुक्ल देवरियामण्डलान्तर्गत कुशीनगर के दक्षिण में साढ़े तीन कोस की दूरी पर मठियाशुक्ल ग्रामनिवासी सरयूपारीण–गर्गवंशावतंस श्री चन्द्र शेखर शुक्ल के सुपुत्र, ''सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में वेदवेदाङ्गसंकाय के व्याकरण विभाग के अध्यक्ष, शब्दशास्त्रादिपरिशीलनपटु, 'वाचस्पति' उपाधि से विभूषित एवं स्वर्णपदकप्राप्तकर्ता, अनेक ग्रन्थों के व्याख्याता एवं सम्पादक आचार्यपदविभूषित वास्तव में आचारवान् एक महान् प्रतिष्ठित विद्वान् थे। निस्सन्देह ऐसे महान् विद्वान् द्वारा रचित उक्त महाकाव्य भी कोई असाधारण रचना ही होनी चाहिए क्योंकि उन्होंने जिन श्री राधा जी को अपनी रचना का मुख्य विषय बनाया है, वे भी कोई सामान्य पात्र न होकर साक्षात् भगवान् श्री कृष्ण (कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्)[1] की आद्यापराशक्तिस्वरूपा हैं जिनके सम्मुख नतमस्तक होते हुए किसी भक्त कवि ने कहा है कि –

''यामाद्यां प्रवदन्तिदेवमुनयः शक्तिं परामद्भुताम्।
श्रीकृष्णोऽपि विभावयत्यनुदिनं दिव्यांनिजाह्लादिनीम्।
यां गोपीति पदेन नौति नियतं वेदोऽखिलः सर्वदा,
तां राधां सततं नमामि शिरसा सौवर्णवर्णां मुदा।।[2]

ऐसे दिव्य पात्रों से अलंकृत महाकाव्य ही समाज का कल्याण कर सकता है – यही सोचकर मैंने इस 'राधाचरितमहाकाव्यम्'' को अपने अध्ययन का विषय बनाया है। इस महाकाव्य में श्री राधाकृष्ण की दिव्य लीलाओं के अतिरिक्त प्रकृति चित्रण भी अत्यन्त मनोहर रूप में प्रस्तुत किया गया है – जैसे– शरद शिशिर

---

[1] श्रीमद् भागवत महापुराण– 1–3–28
[2] ''श्री राधाचरित महाकाव्यम्''– प्रस्तावना (पृष्ठांक–7)

बसन्त ग्रीष्म वर्षादि ऋतुओं का वर्णन, प्रातः काल की शोभा का वर्णन, चन्द्रोदय का वर्णन, यमुनाराम एवं समुद्र का प्राकृतिक वर्णन अत्यन्त मनोहर बन गया है। रस, छन्द, अलंकारों का भी सुन्दर चित्रण किया गया है। कोमल कान्त पदावली युक्त भाषा सौष्ठव भी दर्शनीय है। कहने का अभिप्राय यह है कि काव्यशास्त्रीय दृष्टि से भी यह महाकाव्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होता है।

पारमार्थिक दृष्टि से मेरे इस अध्ययन का मुख्य प्रयोजन भी वही है जो आचार्य श्री विश्वनाथ ने काव्यानुशीलन का प्रयोजन बतलाते हुए कहा है –

"चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।

काव्यादेव..... ।[1]

उक्तं च – "धर्मार्थ काममोक्षेषु वैचक्षण्य कलासु च ।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च, साधु काव्य निषेवणम्।"[2]

इस पद्य में धर्मादि पद लक्षणा से अपने साधनों को बोधित करते हैं जिससे यह अर्थ प्रकट होता है कि अच्छे काव्यों के अध्ययनादि से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधनों तथा नृत्यादिकलाओं में वैचक्षण्य प्राप्त होता है, संसार में कीर्ति होती है तथा हृदय में प्रसन्नता होती है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह बात सिद्ध हो जाती है कि आचार्य शुक्ल जैसे महाकवि द्वारा रचित श्री राधाचरित महाकाव्यम् का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन लौकिक एवं अलौकिक दोनों दृष्टियों से अत्यन्त उपयोगी, महत्त्वपूर्ण तथा अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि द्वारा परम कल्याणकारी सिद्ध होगा– ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

महाकवेः परिचयः–

देवरिया (देवपुरी) मण्डलान्तर्गत कुशीनगर दक्षिणसार्द्धक्रोशत्रयपरिमित

---

[1] साहित्य दर्पण– 1/2; पृष्ठ 7/8

[2] साहित्य दर्पण– पृष्ठांक 10

*मठियाशुक्ल ग्रामवास्तव्येन सरयूपारीणगर्गवंशावतंसेन*

*श्री चन्द्रशेखर शुक्लात्मजेन वाराणसेय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालये वेदवेदाङ्गसंकायस्य व्याकरणविभागस्य चाध्यक्षचरेण प्राप्त शब्दशास्त्रादिपरिशीलनपाटवेन 'वाचस्पति'' इत्युपाधिभूषितेन स्वर्ण पदक प्राप्तेन श्री जानकी जानिना व्याख्यातसम्पादितानेकग्रन्थेन श्री कालिकाप्रसाद शुक्लेन विरचितम् ''श्री राधाचरितमहाकाव्यम्''।*[1]

*मैंने इस महाकाव्य का चयन इसलिये किया है क्योंकि यह एक अर्वाचीन महाकवि की महत्त्वपूर्ण मौलिक रचना है तथा इस महाकाव्य पर ऐसा शास्त्रीय विवेचनात्मक कोई अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। इस महाकाव्य में कवि ने राधाकृष्ण का क्रमशः आद्यापराशक्ति रूप एवं परमेश्वर रूप बहुत से मनोहर छन्दों एवं अलांकारों से अलंकृत तथा कोमलकान्त पदावली से सुशोभित किया है जिससे काव्यरसिकों को काव्यरस का आनन्द मिलता है तथा भगवच्चरणारविन्दानुरक्त भगवद्भक्तों को राधा एवं कृष्ण की दिव्य मधुर लीलाओं में परमानन्द की अनुभूति होती है।*

*यह विषय साहित्य शास्त्र के विद्यार्थियों के लिये भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह महाकाव्य और प्रस्तुत अध्ययन काव्यरसिकों एवं भक्तजनों – दोनों के लिए आनन्द प्रदान करने वाला सिद्ध होगा इसमें कोई संदेह नहीं है।*

*आचार्य कालिका प्रसाद शुक्ल कृत*

*श्री राधाचरितमहाकाव्यम्*

*(श्री केशवराव मुसलगाँवकर के शब्दों में)*

*श्री केशवराव मुसलगाँवकर अपने ग्रन्थ "आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा" में श्री राधाचरित महाकाव्यम् के विषय में लिखते हैं कि –*[2]

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्– प्रत्येक सर्ग के अन्त में प्रदत्त परिचय*

[2] *आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा– पृष्ठ – 261*

*ई0 सन् 1985 में "श्री राधाचरित महाकाव्यम्" का प्रणयन आचार्य कालिका प्रसाद शुक्ल ने किया है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने श्री राधा को आद्यापराशक्ति के रूप में तथा श्री कृष्ण को परमेश्वर के रूप में वर्णित किया है। भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की मिश्र शैली में वर्णित इस काव्य का शान्त रस से आप्लावित रास लीला वर्णन भी सहृदय पाठकों के हृदयावर्जन में नितान्त समर्थ है।*

*कवि ने त्रयोदशात्मक सर्ग के इस महाकाव्य का प्रणयन सकल ब्रह्माण्ड की कारण भूत करुणामयी श्री राधा के चरणों की अर्चना के निमित्त किया है, महाकवि कहलाने की अभिलाषा से नहीं। काव्य की कथावस्तु न तो पूर्णतया पौराणिक है और न ऐतिहासिक, प्रत्युत ब्रह्माण्ड पुराण, स्कन्द पुराण, देवी भावगत, राधातापनी उपनिषद्, आदि में चित्रित अद्भुत रसमयी घटनाओं का आश्रय लेकर कवि ने मौलिक विचारों से इस महाकाव्य का प्रणयन किया है। कवि ने गौतमी तन्त्र के अनुसार श्री राधा को आद्यापराशक्ति के रूप में ही वर्णित किया है। कवि ने काव्य के तृतीय सर्ग में 58 से 62 श्लोकों में श्री राधिका का सौन्दर्य वर्णन करते हुए कहा है –*

*हरिणचम्पककान्तिशरीरभां, स्फुरितकोटिकलाधरदीधितिम्।*
*वदनवर्जित शारदचन्द्रिकां, नयननिन्दितनीलसरोरुहाम्।।*[1]

*पौराणिक वातावरण को समुद्भासित करने वाले इस परम्परानुगामी काव्य में श्री राधा के आविर्भाव के पूर्ववर्ती समय का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है – देवगण स्तुति करते हैं। वृषभानु की पत्नी कीर्ति का वामनेत्र स्फुरित होने के साथ ही उसके पयोधरों से दुग्ध धाराएँ स्रवित होने लगती हैं। वृषभानु प्रातःकाल स्वप्न में सूर्यार्घ्यदान करने के लिये की हुई अपनी अंजली में शिशुकमल को स्वयं आए हुए देखते हैं। श्रीराधिका प्रकट होने पर वृषभानु से कहती है–*

*यत इदं जगतः स्थितिसंभवौ नियतकालं समापितकर्मणः।*

---

[1] *श्री राधा चरित महाकाव्यम्– 3/58*

*प्रविलयोऽपि च यत्र समर्थितः परमदुर्लभ तत्त्वमहं हितत्।।*

*परसमाधिसमाहितमानसैः क्षपितकल्मषयुक्तजनैरहो।*

*परमतत्त्वमिदं न हि दृश्यते तव तु भागवतस्य पुरः स्थितम्।।*

*किमपि तत्त्वमचिन्त्यमनुत्तमं तदतिरिक्तमिहास्ति न किञ्चन।*

*यदिति वेदवचः परिभाषते तदहमेतदुपास्व यथाविधि।।*[1]

*विषय वर्णन में महाकाव्य सम्बन्धी औचित्य प्रदान करने के लिये कवि ने षड्ऋतुओं का प्रभात का, सरोवर का, नदी–यमुना का, चन्द्रोदय का, समुद्र का, नगरी का, नव–दम्पतियों की विलास–क्रीड़ाओं का, जन्मोत्सव का, बाललीला का, गोवर्धन पर्वत का वर्णन तत् तत् सर्गों में बड़ी कमनीयता के साथ किया है। कथा वस्तु में श्री राधिका कृष्ण चरित रूप कार्य आदि से अन्त तक व्याप्त है और अन्य वर्णन भी इसी के पोषक रूप में प्रस्तुत किया है। वस्तुओं के चित्रण में कवि सजग है और प्रकृति के वर्णन में उसकी निरीक्षण शक्ति को उसकी कल्पनाशक्ति परिपुष्ट करती हुई परिलक्षित होती है। शैली प्रसन्नमयी वैदर्भी है। अलंकारों का सन्निवेश रुचिर है। शृङ्गार के साथ अन्य रस (भक्ति और शान्त रस) भी उचित स्थलों पर निविष्ट हैं। सूक्तियों कीप्रचुरता के कारण काव्य की शोभा बढ़ गई है, यथा– "अचिन्त्यसामर्थ्यमलौकिकानाम्", अनुभावविशेषशालिनां किमसाध्यं जगतीतलेऽखिले", "ऐश्वर्यं महदपि नाशमेति काले", "विजहति न हि विज्ञा जातुचित् पूज्यपूजाम्", "प्रायोजड़ा अपि कृतज्ञधियो भवन्ति", "धूर्ताः, स्वदोषमपरं प्रतिरोपयन्ति", "केलिःस्त्रियाः कर्षति वीतरागान्", कालोऽयं नहि सहते प्रतापमुग्रम्", आदि सरस सूक्तियों से यह काव्य भरा पड़ा है। कहना न होगा कि "श्रीराधाचरित" के निर्माण में कवि ने संस्कृत के सर्वमान्य कवि कालिदास की ललित पदावली तथा भावों को बड़ी रोचकता से अपनाया है। कवि ने प्रस्तुत काव्य को विभिन्न छन्द योजना से अलंकृत किया है, यथा– शिखरिणी,*

---

[1] *श्रीराधा चरित महाकाव्यम्–3/65, 66, 67*

*वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, मालिनी, वियोगिनी, आर्या, मञ्जुभाषिणी इत्यादि छन्दों का प्रयोग सुरुचिपूर्ण हुआ है। प्रस्तुत काव्य का सौष्ठव नितान्त स्पृहणीय है। रूढ़ विषयों के वर्णन में भी कवि ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। ऋतुओं का वर्णन सजीव है। उद्दीपन रूप में बसन्त वर्णन का चित्र देखिये–*

*अतिमुक्तचम्पकवने सरोजिनीवदनासवेन मुदितः समीरणः।*

*दयितः प्रियाङ्कशयने निषेवते शयितारतिश्रमनिदाघभूषिताः।। श्रीराधा चरिते–7/2*

*कवि ने प्रकृति वर्णन द्वारा तत्कालीन वातावरण निर्मिति में एक विशेष सुषमा उद्भासित की है। वर्षाकाल में झींगुरों के शब्दों द्वारा रात्रि के सन्नाटे का अनुभव होता है।*

*झिल्लीका 'झन–झन' निःस्वने निशीथे, रन्तुं केतकसुमनोमनोभिरामे।*
*राधायाः पुलकितपाणिमादधानः, कालिन्दीमतितरलामगान् मुरारिः।।*[1]

*कीचड़ भरे जल में शूकर यूथों का घों–घों भरा शब्द उनकी स्वाभाविक क्रियाओं का आभास कराता है। रासगीत के प्रभाववश कपोत, भी 'ओङ्कार', 'ओम्', 'हुम्' आदि शब्द करते लक्षित होते हैं–*

*मत्ताः कपोताः कमनीयकायाः कुलायवासा अनुरासगीतम्।*
*ओङ्कार हुङ्कार गिरो गृणानाः स्वचेतसा गीतगवीमुपेताः।।*[2]

*वरसाना नगरी का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वह नगरी स्वयमुद्गता थी, किसी के द्वारा निर्मित नहीं। उसके चतुर्दिक सौन्दर्य को देखने के लिए, ब्रह्मा स्वयं चतुर्मुख हो गए–*

*व्रजभू सरसी सरोजिनी वरसानुः स्वयमुद्गता पुरी।*
*परितः परिपातुमीक्षणैर्विधिरेनां किमभूच्चतुर्मुखः।।*[3]

*नगरी का वर्णन परम्परानुगामी है, वह प्राचीन काव्य वर्णनों का स्मरण कराता है। विलासीजनों के गृह–शुक नायक–नायिकाओं की रति–क्रीड़ा का वर्णन इस प्रकार करते थे–*

---

[1] *श्री राधा चरित महाकाव्यमे–10/42*
[2] *श्री राधा चरिते–9/64*
[3] *श्री राधा चरिते–2/1*

*यदगारशुकोऽपि मानिनीं रतिकामोत्सवहृद्यवार्तया।*

*प्रियभर्तुरलं प्रसादयन् निशि साचिव्यमुपैति नर्मणः।।*[1]

*कवि का प्रभात वर्णन भी रत्नाकर के 'हर विजय' महाकाव्य के वर्णनों की झलक उत्पन्न करता है–*

*नववधूस्तनभारनिपीडितः प्रियतमाकरपाशनियन्त्रितः।*

*विधिवशात् परिरम्भसुखं त्यजन् युवजनः शपते विधयेऽधुना।।*[2]

*स्थान–स्थान पर कवि ने विभिन्न शास्त्र–चर्चा के द्वारा अपने पाण्डित्य को व्यक्त किया है, यथा– व्याकरण, न्याय, वेदान्त, योग, किम्बहुना साहित्य के सिद्धान्तों का निरूपण भी यथा स्थान सुरुचि के साथ बन पड़ा है। राधा कृष्ण का ऐक्यत्व, उनकी अभिन्नता को प्रतिपादित करने वाले उपनिषद् के दुरूह सिद्धान्तों को सरल शब्दों में कवि ने व्यक्त कर अपने वैदुष्य को प्रतिपादित किया है। वर्तमान काल के आचार–विचार की जानकारी की भी प्रभूत सामग्री इस काव्य में उपस्थित है। यथा–मथुरा नगरी का वर्णन। कवि का निरीक्षण व्यापक है। ग्रीष्म वर्णन में लोगों के व्यवहार का, उनके द्वारा उपभोग में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न फलों का तथा किसानों के तपती धूप में कार्य करने का यथार्थ वर्णन कवि ने किया है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत काव्य में हृदय पक्ष तथा कलापक्ष– दोनों का मंजुल सामञ्जस्य सहृदयों के हृदयावर्जन में सर्वथा समर्थ है। मिश्र शैली में निबद्ध यह काव्य अलंकार जन्य चमत्कारों से तथा काव्य गुणों से सर्वथा मण्डित है। काव्य का सर्गानुसार विषय वस्तुक्रम इस प्रकार है–*

*प्रथम सर्ग में – श्री राधा स्तुति और राधा सरोवर वर्णन। द्वितीय सर्ग में – बरसाना तथा यमुना वर्णन। तृतीय सर्ग में – वृषभानु की पत्नी कीर्ति को स्वप्न दर्शन, प्रभात वर्णन और वृषभानु को राधा की प्राप्ति। चतुर्थ सर्ग में – जन्मोत्सव, गर्ग ऋषि द्वारा राधानामकरण संस्कार। पञ्चम सर्ग में – देवताओं के द्वारा राधा*

---

[1] *श्री राधा चरिते–2/8*

[2] *श्री राधा चरिते–3/47*

*नाम का समर्थन। माता के द्वारा राधा की बालक्रीड़ा के लिये प्रार्थना, शरद और शिशिर वर्णन। षष्ठ सर्ग में – राधा कृष्ण का एकान्त में वार्तालाप, बसन्त वर्णन और बरसाने का होलका वर्णन। सप्तम सर्ग में – यमुना तट पर नन्द को बालक दर्शन, नन्द की सुत प्राप्ति की इच्छा और चन्द्रोदय वर्णन। अष्टम सर्ग में श्री कृष्ण की बाल लीला, राधा स्थान का वर्णन तथा श्री कृष्ण का आगमन नवम सर्ग राधा कृष्ण का दोलोत्सव, रास वर्णन। दशम सर्ग में ग्रीष्म और वर्षा वर्णन और कृष्ण के पास शबरियों का आगमन। एकादश सर्ग में – शबरियों का प्रेमोपालम्भ और कृष्ण द्वारा उसका समाधान और राधा के पास कृष्ण का पहुँचना। द्वादश सर्ग में – निकुञ्ज में श्री कृष्ण के द्वारा राधा का शृङ्गार, दोनों का परिहास; पश्चात् पुरी गमन और समुद्र का वर्णन। त्रयोदश सर्ग में – मथुरा वर्णन और श्रीमद् भागवत कथा प्रसंग तथा यमुना वर्णन।*

## *विनम्र निवेदनमुद्देश्यञ्च*

*ममता उवाच–*

*मृगमदकृतचर्चा, पीतकौशेयवासा*
*रुचिरशिखिशिखण्डा, बद्धधम्मिल्लपाशा।*
*अनृजुनिहितमंसे, वंशमुत्क्वाणयन्ती*
*धृतमधुरिपु लीला, मालिनी पातु राधा।। (मालिनी छन्द)*

*श्री राधा उवाच–*

*चलो सखी उस देश को, जहाँ कृष्ण का राज।*
*जल भरें दर्शन करें, एक पन्थ दो काज।*

*ममता उवाच–*

*भागवतम् के श्री कृष्ण का, पिता श्री ने गुणगान किया।*
*उनसे प्रेरित होकर मैंने, श्री राधा का गुणगान लिया।।*

*आचार्य कालिका प्रसाद जी ने, श्री राधाचरित महाकाव्य रचा।*
*बस उसका मन्थन करने का, भाव मेरे मन को था रुचा।।*

*डॉ0 सुभाष सचदेवा जी से, विद्वान् गुरु ने ज्ञान दिया।*
*उनके सुझाए मार्ग पर ही, चलना मैंने ठान लिया।।*

*राधा नाम गुणगान करें हम, आएँगे फिर तो बिहारी जी।*
*राधे–राधे गाने वाली, बजेगी मुरली प्यारी जी।।*

*महारास की लीला होगी, गोपी जन सब नाचेंगी।*
*प्राणिमात्र को आकर्षित कर, कृष्ण की मुरली बाजेगी।*

*सत् चित् आनन्द छाया होगा, भव से हम तर जाएँगे।*
*मेरे इस अध्ययन कर्म से, भव से सब तर जाएँगे।*

*!! इति !!*